कानपुर। सोमवार • 2 अगस्त • 2021

राष्ट्रीय सहारा

सीएसए कर्मियों के लिए टीकाकरण आज व कल

कानपुर। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के कर्मचारियों के लिए कोविड टीकाकरण की व्यवस्था 2 व 3 अगस्त को परिसर स्थित मानव चिकित्सा केन्द्र पर की गई है। अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. आरपी सिंह के हवाले से विवि प्रवक्ता डॉ. खलील खान ने वताया कि अभियान के तहत 18 से 45 तथा 45 से अधिक आयु वर्ग के कर्मियों को कोरोना की वैक्सीन लगायी जाएगी।

Read Only - You can't save changes to this file.

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, सोमवार, 02 अगस्त, 2021, वर्ष : 12, अंक : 286, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

विश्वविद्यालय कार्मिकों को लगेगी वैक्सीन

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को विश्वविद्यालय स्थित मानव चिकित्सा केंद्र पर सोमवार और मंगलवार को 2 एवं 3 अगस्त को दो दिन 18 से 45 एवं 45 से अधिक आयु वर्ग के कार्मिकों को कोरोना रोधी टीका लगाया जाएगा। यह जानकारी विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ.आर.पी.सिंह ने दी।

Sign in to edit and save changes to this file.

vkj-,u-vkbZ-,u& UPHIN/2009/44666

jkVªh; fgUnh nSfud

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 289 कानपुर देहात, सोमवार 02 अगस्त 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

आज व कल कृषि विश्वविद्यालय के कार्मिकों को लगेगा कोरोना रोधी टीका

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कार्मिकों को विश्वविद्यालय स्थित मानव चिकित्सा केंद्र पर दिनांक 2 एवं 3 अगस्त 2021 को दो दिन 18 से 45 एवं 45 से अधिक आयु वर्ग के कार्मिकों को कोरोना रोधी टीका लगाया जाएगा। यह जानकारी विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉक्टर आरपी सिंह के हवाले से मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने दी।

खंड विकास अधिकारी ने किया ग्राम पंचायतों में औचक निरीक्षण

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

Sign in to edit and save changes to this file.

कानपुर देहात,
सोमवार, 02 अगस्त, 2021
वर्ष: 06 अंक: 303
मूल्य: 1+1=2 रु
पृष्ठ: 8
R.N.I.NO.
UPHIN/2015/64600

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
अमन यात्रा
कानपुर देहात एवं गुजरात से प्रकाशित दैनिक समाचार प
डी ए वी पी (भारत सरकार) से विज्ञापन प्रकाशन हेतु मान्यता प्राप्त
8707095473
www.amanyatralive.com, www.amanyatra.in

वर्षाकाल में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं:- डॉ. रामजी गुप्ता

अमन यात्रा ब्यूरो

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के लिए बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं। मुंहपका-खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें एवं उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह हे कि यह रोग कभी भी गांव में फैल सकता है। हालांकि गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सूख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं है इसलिए रोग होने से पहले ही उसके टीके लगवा लेना फायदेमन्द है। उन्होंने कहा कि इस रोग से पशु को तेज बुखार आता है। पैरों तथा मुंह में फफोले पड़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना पैरो में सूजन (खुर के आस-पास) जिससे पशु लंगड़ाकर चलता है।

खुर में घाव होना एवं घावों में कीड़ा हो जाना कभी-कभी खुर का पैर से अलग हो जाना। मुँह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसूड़े, ओष्ट आदि पर छाले पड़ जाते हैं छाले फूटने पर उसमें पस पड़ जाता है जिससे चारा खाने तथा पानी पीने मे असमर्थ हो जाता है तथा तेजी के साथ दर्द होता है। गाभिन पशुओं का कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2-12 दिन तक रह सकता है। रोगी पशु मरता तो नही है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है। उत्पादन क्षमता में अत्यधिक ह्रास, बैलों की कार्य क्षमता में कमी,प्रभावित पशु स्वस्थ्य होने के उपरान्त भी महीनों हांफ्ते रहता है।बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है।शरीर के रोयें तथा खुर बहुत बढ़ जाते है उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पशु को तुरन्त अलग बाडे में कर दें एवं पशु के चारागाह को बदल दें।इसका टीकाकरण अवश्य करा लें। इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल के छाले का काढ़ा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। छालो को लाल दवा अथवा बोरिक एसिड के घोल से दो-तीन बार धोकर मक्खी को दूर रखने वाली एंटीसेप्टिक क्रीम लगाये। मुँह के छाले को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस दौरान पशुओं को मुलायम एवं सुपाच्य भोजन दिया जाना चाहिए। दर्दनाशक तथा बुखार उतारने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। यदि आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
ख़बर एक्सप्रेस

01 अगस्त 2021, रविवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhaba

सीएसए में 2-3 अगस्त को लगेगी वैक्सीन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के मानव चिकित्सा केंद्र में सोमवार व मंगलवार को 18 से 45 और 45 से अधिक आयु वर्ग के कर्मचारियों को कोरोना रोधी टीका लगाया जाएगा। यह जानकारी अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. आरपी सिंह के हवाले से मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने दी है। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक कर्मी पहुंच कर वैक्सील लगवाएं।

वर्ष 15 अंक 210 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 02 अगस्त 2021

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com पेज - 8 ज़ी कॉमेडी शो में तनावमुक्त होकर खिलखिला

वर्षाकाल में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं : डॉ. रामजी गुप्ता

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के लिए बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं। मुंहपका-खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें एवं उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह है कि यह रोग कभी भी गांव में फैल सकता है। हालांकि गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सूख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं है इसलिए रोग होने से पहले ही उसके टीके लगवा लेना फायदेमन्द है। उन्होंने कहा कि इस रोग से पशु को तेज बुखार आता है। पैरों तथा मुंह में

फफोले पड़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना पैरों में सूजन (खुर के आस-पास) जिससे पशु लंगड़ाकर चलता है। खुर में घाव होना एवं घावों में कीड़ा हो जाना कभी-कभी खुर का पैर से अलग हो जाना।

मुँह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसूड़े, ओष्ठ आदि पर छाले पड़ जाते हैं छाले फूटने पर उसमें घस पड़ जाता है जिससे चारा खाने तथा पानी पीने मे असमर्थ हो जाता है तथा तेजी के साथ दर्द होता है। गाभिन पशुओं का कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2-12 दिन तक रह सकता है। रोगी पशु मरता तो नहीं है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है।

उत्पादन क्षमता में अत्यधिक ह्रास, बैलों की कार्य क्षमता में कमी,प्रभावित पशु स्वस्थ्य होने के उपरान्त भी महीनों हाँफते रहता है।बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है।शरीर के रोयें तथा खुर बहुत बढ़ जाते हैं उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पशु को तुरन्त अलग बाड़े में कर दें एवं पशु के चारागाह को बदल दें । इसका टीकाकरण अवश्य करा लें।

इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल के छाले का काढ़ा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। छालों को लाल दवा अथवा बोरिक एसिड के घोल से दो-तीन बार धोकर मक्खी को दूर रखने वाली एंटीसेप्टिक क्रीम लगाये ।

मुँह के छाले को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस दौरान पशुओं को मुलायम एवं सुपाच्य भोजन दिया जाना चाहिए। दर्दनाशक तथा बुखार उतारने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। यदि आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें ।

गलाघोटू

पशुओं में गलाघोटू को ऐसे पहचाने पशु को तेज बुखार आता है गले तथा जीभ में सूजन बढ़ जाती है जिसके कारण पशुओं को श्वांस लेने मे तकलीफ होने लगती है और उसके गले से घर्र-घर्र की आवाज निकलनी शुरू हो जाती है। ऐसी अवस्था में पशु चारा तथा पानी नहीं पी पाता है, यहां तक की उसे लार घुटकना मुश्किल हो जाता है, परिणाम स्वरूप पशु के मुंह से लार टपकती रहती है। पशु के गले में सूजन के स्थान पर छूने से गर्म का एहसास होता है। पशु की आँखें लाल तथा बाहर की ओर निकली प्रतीत होती है। पशु बेचैन रहता है। इस रोग की अवधि 1-3 दिन तक होती है । ऐसी अवस्था में अगर उपचार न किया गया और लापरवाही बरती गयी तो पशु की मौत भी हो सकती है।

ऐसी करें बचाव यह एक संक्रामक तथा छुआ-छूत वाला रोग है, इसलिए बीमार पशु का चारा किसी अन्य पशु को न खिलायें, जिस पात्र में बीमार पशु को पानी पिलाया है, उससे स्वस्थ पशु को पानी पिलाने से बचें। रोगग्रस्त पशु को जानवरों के समूह से अलग कर दें तो बेहतर नहीं तो अन्य पशुओं में ये रोग फैलने का भय बना रहता है। स्वस्थ पशुओं को भी गलाघोटू का एन्टीसीरम लगाकर उन्हें बीमार होने से बचाया जा सकता है ।

उपचार: इस रोग के उपचार मे सल्फाड्रग उप्प् प्रति जैविक तथा बुखार एवं दर्द कम करने की दवायें दी जाती हैं। यह रोग की उग्रता पर निर्भर करता है अतः अपने नजदीक के पशुचिकित्सालय से सम्पर्क कर उचित इलाज करवायें, लापरवाही की तो पशु से हाथ धोना पड़ सकता है।

लंगड़ी बुखार अथवा सुजवा सुजवा बुखार के लक्षण: पीड़ित पशु को तेज बुखार आता है। पशु के कंधों एवं जांघों में सूजन आ जाती है या बढ़े कंधें एवं जांघ हवा भर जाती है, जिसके कारण चुर्र-चुर्र की आवाज आती है। इस रोग की अवधि 1 से 5 दिनों तक होती है। अगर रोग पर नियंत्रण नहीं किया गया तो पशु की तीन दिनों के अंदर मृत्यु सम्भव है।बचाव: यह रोग रोगी पशु के दूषित चारा पानी तथा खुले घाव से रिसते खून के सम्पर्क में जब स्वस्थ पशु आता है तभी यह फैलता है अतः रोगी पशु को तुरन्त समूह से अलग कर उसका इलाज करते हैं ।

उपचार- पशु में जैसे ही ये लक्षण दिखायी पड़ें तो शुरूआत में ही पेन्सिलीन 20-30 लाख यूनिट का इंजेक्शन तुरन्त लगवाएं तथा 100-200 सी.-सी. एन्टीलंगड़ी सीरम का इंजेक्शन जरूर लगवाएं। अगर पशु में कोई सुधार न दिखे तो नजदीकी पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके रोगी पशु का बेहतर इलाज करवाना न भूलें।

एन्थ्रेक्स: विषहरी गोरही रोग कारक- बैसिलस एन्थ्रेसिस

लक्षण: यदि पशु के मुंह, नाक तथा मल के साथ रक्त मिला हुआ झाग जैसा निकलता है, तो एन्थ्रेक्स विषहरी गोरही के लक्षण हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में पशु के शरीर का तापक्रम बढ़ा होता है, पशु तेजी के साथ श्वांस लेता है तथा शरीर में सूजन आ जाती है। ऐसी अवस्था में समय से इलाज न मिलने पर पशु की अचानक मृत्यु भी हो सकती है । यह रोग प्रभावित पशु के सम्पर्क में आने पर अन्य पशुओं में फैलता है।

बचाव: रोगी पशु को बाड़े से तुरन्त अलग कर दें। किसी भी अवस्था में पीड़ित पशु का चारा -पानी अन्य पशु को न दें। अगर पशु की मृत्यु हो गयी है तो मृत पशु को कभी भी सीधे हाथ से न छूयें तथा मृत पशु के छिद्रों को तुरन्त बन्द कर दें । मृत पशु को जला दें अथवा जमीन में चूना डालकर दफना दें।

उपचार: इस रोग के शुरूआती दौर में एन्थ्रेक्स एन्टीसीरम 100-150सी.सी. का इंजेक्शन लगवाने के बाद तुरन्त नजदीक के पशुचिकित्साधिकारी से सम्पर्क करें।

थनैला: मिस्टाइटिस

लक्षण: साधरणतया यह रोग दुधारू पशु के अयन तथा थनों मे होता है । रोग से प्रभावित होने पर पशु के अयन मे दर्द होता है तथा थनों मे दूध का बहाव बन्द हो जाता है । रोग अधिक तीव्र होने पर थनों मे सूजन आ जाती है तथा उनको दबाने पर दूध की जगह खून निकलता है। रोग की पुष्टि के लिए स्ट्रीप कप परीक्षण करते हैं जिससे इसकी पुष्टि होती है ।

बचाव: इस रोग से बचाव के लिये आवश्यक है कि दुहाई पूर्ण हस्त विधि से सूखे हाथों एवं एक पशु की दुहाई के बाद दूसरे पशु के थनों को किसी रोगाणुनाशक से अवश्य धो लें ।

उपचार: पशु के थनों एवं अयन में यदि गांठ पड़ गयी हो तो पेंसिलीन एन्टीबायोटिक का प्रयोग करते हैं इसके अलावा पेडीस्ट्रीन को प्रभावित थन में चढ़ाने से, थन इस रोग से मुक्त हो जाता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

vkj-,u-vkbZ-ua& UPHIN/2009/44666   jk"Vªh; fgUnh nSfud

सत्ता एक्सप्रेस

डी.ए.वी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12   अंक : 289   कानपुर देहात, सोमवार 02 अगस्त 2021   Email: sattaexpress@rediffmail.com

वर्षाकाल में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएंरू–डॉ रामजी गुप्ता

सत्ता एक्सप्रेस. विशेष पशुपालकों के लिए सलाह

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के निर्देश के क्रम में पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के लिए बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दें तो पशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं। मुंहपका–खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें एवं उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह है कि यह रोग कभी भी गांव में फैल सकता है। हालांकि गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सूख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं है इसलिए रोग होने से पहले ही उसके टीके लगवा लेना फायदेमन्द है। उन्होंने कहा कि इस रोग से पशु को तेज बुखार आता है। पैरों तथा मुंह में फफोले पड़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना पैरों में सूजन (खुर के आस–पास) जिससे पशु लंगड़ाकर चलता है। खुर में घाव होना एवं घावों में कीड़ा हो जाना कभी–कभी खुर का पैर से अलग हो जाना।

मुंह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसूड़े, ओष्ट आदि पर छाले पड़ जाते हैं छाले फूटने पर उसमें घाव पड़ जाता है जिससे चारा खाने तथा पानी पीने में असमर्थ हो जाता है तथा तेजी के साथ दर्द होता है। गाभिन पशुओं का कभी–कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2–12 दिन तक रह सकता है। रोगी पशु मरता तो नहीं है परन्तु बहुत कमजोर हो जाता है।

उत्पादन क्षमता में आवश्यक ह्रास, बैलों की कार्य क्षमता में कमी,प्रभावित पशु स्वस्थ होने के उपरान्त भी महीनों हांफते रहता है।बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है।शरीर के रोयें तथा खुर बहुत बढ़ जाते हैं उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पशु को तुरन्त अलग बाड़े में कर दें एवं पशु के चारागाह को बदल दें । इसका टीकाकरण अवश्य करा लें।

इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल के छाले का काढ़ा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। छालों को लाल दवा अथवा बोरिक एसिड के घोल से दो–तीन बार धोकर मक्खी को दूर रखने वाली एंटीसेप्टिक क्रीम लगायें । मुंह के छाले को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस दौरान पशुओं को मुलायम एवं सुपाच्य भोजन दिया जाना चाहिए। दर्दनाशक तथा बुखार उतारने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। यदि आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें ।

गलाघोंटूरू

पशुओं में गलाघोंटू को ऐसे पहचाने पशु को तेज बुखार आता है गले तथा जीभ में सूजन बढ़ जाती है जिसके कारण पशुओं को श्वास लेने में तकलीफ होने लगती है और उसके गले से घर्र–घर्र की आवाज निकलनी शुरू हो जाती है। ऐसी अवस्था में पशु चारा तथा पानी नहीं पी पाता है, यहां तक की उसे लार घूटकना मुश्किल हो जाता है, परिणाम स्वरूप पशु के मुंह से लार टपकती रहती है। पशु के गले में सूजन के स्थान पर छूने से गर्म का एहसास होता है। पशु की आंखें लाल तथा बाहर की ओर निकली प्रतीत होती है। पशु बेचैन रहता है। इस रोग की अवधि 1–3 दिन तक होती है । ऐसी अवस्था में अगर उपचार न किया गया और लापरवाही बरती गयी तो पशु की मौत भी हो सकती है।ऐसे करें बचाव यह एक संक्रामक तथा छुआ–छूत वाला रोग है, इसलिए बीमार पशु का चारा किसी अन्य पशु को न खिलायें, जिस पात्र में बीमार पशु को पानी पिलाया है, उससे स्वस्थ पशु को पानी पिलाने से बचें। रोगग्रस्त पशु को जानवरों के समूह से अलग कर दें तो बेहतर नहीं तो अन्य पशुओं में ये रोग फैलने का भय बना रहता है। स्वस्थ पशुओं को भी गलाघोंटू का एन्टीसीरम लगाकर उन्हें बीमार होने से बचाया जा सकता है ।

उपचारः इस रोग के उपचार में सल्फाडुग उच्च प्रति जैविक तथा बुखार एवं दर्द कम करने की दवायें दी जाती है। यह रोग की उग्रता पर निर्भर करता है अतः अपने नजदीक के पशुचिकित्सालय से सम्पर्क कर उचित इलाज करायें, लापरवाही की तो पशु से हाथ धोना पड़ सकता है।

लंगड़ी बुखार अथवा सुजवा सुजवा बुखार के लक्षणः पीड़ित पशु को तेज बुखार आता है। पशु के कंधों एवं जांघों में सूजन आ जाती है या कहीं कंधी एवं जांघ हवा भर जाती है, जिसके कारण चुर्र–चुर्र की आवाज आती है। इस रोग की अवधि 1 से 6 दिनों तक होती है। अगर रोग पर नियंत्रण नहीं किया गया तो पशु की तीन दिनों के अंदर मृत्यु सम्भव है।बचावः यह रोग रोगी पशु के दूषित चारा पानी तथा खुले घाव से रिसते खून के सम्पर्क में जब स्वस्थ पशु आता है तभी यह फैलता है अतः रोगी पशु को तुरन्त समूह से अलग कर उसका इलाज करते है ।

उपचार– पशु में जैसे ही ये लक्षण दिखायी पड़ें तो शुरुआत में ही पेन्सिलीन 20–30 लाख यूनिट का इंजेक्शन तुरन्त लगवाएं तथा 100–200 सी.–सी. एन्टीलंगड़ी सीरम का इंजेक्शन जरूर लगवाएं। अगर पशु में कोई सुधार न दिखे तो नजदीकी पशु चिकित्सक से सम्पर्क करके रोगी पशु का बेहतर इलाज करवाना न भूलें।

एन्थ्रेक्स विषहरी गोलही रोग कारक– बैसिलस एन्थ्रेसिस

लक्षणः यदि पशु के मुंह, नाक तथा मल के साथ रक्त मिला हुआ झाग जैसा निकलता है, तो एन्थ्रेक्स विषहरी गोलही के लक्षण हो सकते है। ऐसी अवस्था में पशु के शरीर का तापक्रम बढ़ा होता है, पशु तेजी के साथ श्वांस लेता है तथा शरीर में सूजन आ जाती है। ऐसी अवस्था में समय से इलाज न मिलने पर पशु की अचानक मृत्यु भी हो सकती है । यह रोग प्रभावित पशु के सम्पर्क में आने पर अन्य पशुओं में फैलता है।

बचावः रोगी पशु को बाड़े से तुरन्त अलग कर दें। किसी भी अवस्था में पीड़ित पशु का चारा –पानी अन्य पशु को न दें। अगर पशु की मृत्यु हो गयी है तो मृत पशु को कभी भी सीधे हाथ से न छुयें तथा मृत पशु के छिद्रों को तुरन्त बन्द कर दें । मृत पशु को जला दें अथवा जमीन में चूना डालकर दफना दें।

उपचारः इस रोग के शुरुआती दौर में एन्थ्रेक्स एन्टीसीरम 100–150सी.सी. का इंजेक्शन लगवाने के बाद तुरन्त नजदीक के पशुचिकित्साधिकारी से सम्पर्क करें।

थनैला मिस्टाइटिस

लक्षणः साधारणतया यह रोग दुधारू पशु के अयन तथा थनों में होता है । रोग से प्रभावित होने पर पशु के अयन में दर्द होता है तथा थनों में दूध का बहाव बन्द हो जाता है । रोग अधिक तीव्र होने पर थनों में सूजन आ जाती है तथा उनको दबाने पर दूध की जगह खून निकलता है। रोग की पुष्टि के लिए स्ट्रीप कप परीक्षण करते है जिससे इसकी पुष्टि होती है ।बचावः इस रोग से बचाव के लिये आवश्यक है कि दुहाई पूर्ण हस्त विधि । से सूखे हाथों एवं एक पशु की दुहाई के बाद दूसरे पशु के थनों को किसी रोगाणुनाशक से अवश्य धो लें । उपचार पशु के थनों एवं अयन में यदि गांठ पड़ गयी हो तो पेंसिलीन एन्टीबायोटिक का प्रयोग करते हैं इसके अलावा पेट्रोल्टीन को प्रभावित थन में चढ़ाने से, थन इस रोग से मुक्त हो जाता है।

वर्षा ऋतु में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं: डॉ. रामजी

02/08/2021

कानपुर। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के लिए बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं।

अमर उजाला

सोमवार • 02.08.2021

kanpur.amarujala.com

बरसात में पशुओं को रोगों से बचाएं

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ. रामजी गुप्ता ने रविवार को बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि गलाघोंटू रोग होने पर तेज बुखार आता है। बारिश में पशुओं को बीमारियों से बचाएं। (संवाद)

सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर ने पशुपालकों को दिए टिप्स;

बारिश में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएंः डॉ. रामजी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. रामजी गुप्ता ने पशुपालकों के लिए बारिश में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बारिश के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है, इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशओं को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि संक्रामक बीमारियां एक-दूसरे के संपर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलती हैं। विषाणुजनित रोग खुरपका व मुंहपका पशुओं को एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े से होता है जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं। मुंहपका-खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें व उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है, कहने का मतलब यह है कि यह रोग कभी भी गांव में फैल सकता है। हालांकि, गाय में इस रोग से मौत तो नहीं होती फिर भी दुधारू पशु सूख जाते हैं। इस रोग का कोई इलाज नहीं है, इसलिए रोग होने से पहले ही उसके टीके लगवा लेना फायदेमंद है। उन्होंने कहा कि इस रोग से पशु को तेज बुखार आता है। पैरों तथा मुंह में फफोले पड़ जाते हैं, प्रभावित होने वाले पैर को पटकना, पैरों में सूजन (खुर के आसपास) जिससे पशु लंगड़ाकर चलता है। खुर में घाव होना व घावों में कीड़ा हो जाना, कभी-कभी खुर का पैर से अलग हो जाना। मुंह से लार गिरती रहती है, जीभ, मसूड़े, ओष्ट आदि पर छाले पड़ जाते हैं, छाले फूटने पर उसमें पस पड़ जाता है जिससे पशु चारा खाने तथा पानी पीने मे असमर्थ हो जाते हैं और तेजी के साथ दर्द होता है। माता पशुओं का कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यह रोग 2-12 दिन तक रह सकता है। रोगी पशु मरता तो नही है लेकिन बहुत कमजोर हो जाता है। उत्पादन क्षमता में अत्यधिक ह्रास, बैलों की कार्य क्षमता में कमी, प्रभावित पशु स्वस्थ्य होने के बाद भी महीनों हांफते रहता है। बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है। शरीर के रोएं तथा खुर बहुत बढ़ जाते हैं। उन्होंने कहा कि रोग के लक्षण दिखने पर रोगी पशु को तुरंत अलग बाडे में कर दें और पशु के चारागाह को बदल दें। इसका टीकाकरण अवश्य करा लें। इस रोग की रोकथाम के लिए रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम व पीपल के छाले का काढ़ा बना कर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए। छालों को लाल दवा या बोरिक एसिड के घोल से दो-तीन बार धोकर मक्खी को दूर रखने वाली एंटीसेप्टिक क्रीम लगाएं। मुंह के छाले को 1 फीसदी फिटकरी अर्थात 1 ग्राम फिटकरी, 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए। इस दौरान पशुओं को मुलायम व सुपाच्य भोजन दिया जाना चाहिए। दर्दनाशक तथा बुखार उतारने के लिए इंजेक्शन का प्रयोग करते हैं। यदि आपके पशु में इस रोग के लक्षण दिखें तो तुरंत पशुचिकित्सक से संकर्प करें।

पशुओं में गलाघोटू को ऐसे पहचाने

पशु को तेज बुखार आता है, गले तथा जीभ में सूजन बढ़ जाती है जिसके कारण पशुओ को सांस लेने मे तकलीफ होने लगती है और उसके गले से घर्र-घर्र की आवाज निकलनी शुरू हो जाती है। ऐसी अवस्था में पशु चारा तथा पानी नहीं पी पाता है, यहां तक की उसे लार घुटकना मुश्किल हो जाता है, परिणाम स्वरूप पशु के मुंह से लार टपकती रहती है। पशु के गले में सूजन के स्थान पर छूने से गर्म का एहसास होता है। पशु की आंखें लाल तथा बाहर की ओर निकली प्रतीत होती है। पशु बेचैन रहता है। इस रोग की अवधि 1-3 दिन तक होती है। ऐसी अवस्था में अगर उपचार न किया गया और लापरवाही बरती गई तो पशु की मौत भी हो सकती है।

ऐसे करें पशुओं का बचाव

यह एक संक्रामक व छुआ-छूत वाला रोग है, इसलिए बीमार पशु का चारा किसी अन्य को न खिलाए, जिस पात्र में बीमार पशु को पानी पिलाया है, उससे स्वस्थ को पानी पिलाने से बचे। रोगग्रस्त पशु को जानवरों के समूह से अलग कर दें। स्वस्थ पशओं को भी गलाघोटू का एंटीसीरम लगाकर उन्हें बीमार होने से बचाया जा सकता है।

इस तरह करें उपचार

इस रोग के उपचार मे सल्फाड्रग उच्च प्रति जैविक तथा बुखार व दर्द कम करने की दवाएं दी जाती हैं। यह रोग की उग्रता पर निर्भर करता है, इसलिए अपने नजदीक के पशुचिकित्सालय से संपर्क कर उचित इलाज कराएं, लापरवाही की तो पशु से हाथ धोना पड़ सकता है। पशुओं की देखभाल करें।

लंगडी या सुजवा बुखार

पीड़ित पशु को तेज बुखार आता है। पशु के कंधों एवं जांघों में सूजन आ जाती है या कहे तो कंधों व जांघ में हवा भर जाती है जिस कारण चुर्र-चुर्र की आवाज आती है। इस रोग की अवधि 1 से 5 दिनों तक होती है। अगर रोग पर नियंत्रण नहीं किया गया तो पशु की तीन दिनों के अंदर मृत्यु संभव है।

इस तरह करें बचाव

यह रोग रोगी पशु के दूषित चारा-पानी तथा खुले घाव से रिसते खून के संपर्क में जब स्वस्थ पशु आता है तभी यह फैलता है, इसलिए रोगी पशु को तुरंत समूह से अलग कर उसका इलाज करते है। जरूरत पर डॉक्टर से संपर्क करें और बीमार पशु का उचित इलाज कराएं।

उपचार का तरीका

पशु में जैसे ही ये लक्षण दिखायी पड़ें तो शुरुआत में ही पेंसिलीन 20-30 लाख यूनिट का इंजेक्शन लगवाएं तथा 100-200 सीसी. एंटीलंगडी सीरम का इंजेक्शन जरूर लगवाएं। अगर पशु में कोई सुधार न दिखे तो नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क कर रोगी पशु का बेहतर इलाज कराएं।

एन्थ्रेक्सः विषहरी गोरही रोग

यदि पशु के मुंह, नाक तथा मल के साथ रक्त मिला हुआ झाग जैसा निकलता है तो एन्थ्रेक्स विषहरी गोरही के लक्षण हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में पशु के शरीर का तापक्रम बढ़ा होता है, पशु तेजी के साथ सांस लेता है तथा शरीर में सूजन आ जाती है। ऐसी अवस्था में समय से इलाज न मिलने पर पशु की अचानक मुत्यु भी हो सकती है। यह रोग प्रभावित पशु के संपर्क में आने पर अन्य पशुओं में फैलता है।

बचाव के तरीके

रोगी पशु को बाड़े से तुरंत अलग कर दे। किसी भी अवस्था में पीड़ित पशु का चारा -पानी अन्य पशु को न दे। अगर पशु की मृत्यु हो गई है तो मृत पशु को कभी भी सीधे हाथ से न छुए। मृत पशु को जला दें अथवा जमीन में चूना डालकर दफना दें।

उपचार भी है जरूरी

इस रोग के शुरुआती दौर में एन्थ्रेक्स एन्टीसीरम 100-150 सीसी का इंजेक्शन लगवाने के बाद तुंरत नजदीक के पशु चिकित्साधिकारी से संपर्क करें। अगर जरूरत दिखे तो पशु को अस्पताल में भर्ती कराएं।

थनैलाः मिसटाइटिस

साधरणतया यह रोग दुधारू पशु के अयन तथा थनों मे होता है। रोग से प्रभावित होने पर पशु के अयन मे दर्द होता है तथा थनों में दूध का वहाव बंद हो जाता है। रोग अधिक तीव्र होने पर थनों मे सूजन आ जाती है तथा उनको दबानें पर दूध की जगह खून निकलता है। रोग की पुष्टि के लिए स्ट्रीप कप परीक्षण करते हैं जिससे इसका पता चलता है।

इस तरह मिलेगी मदद

बचाव के लिए आवश्यक है कि दुहाई पूर्ण हस्त विधि से सूखे हाथों व एक पशु की दुहाई के वाद दूसरे के थनों को किसी रोगाणुनाशक से अवश्य लें। पशु के थनों व अयन में यदि गांठ पड़ गई हो तो पेंसिलीन एंटीबॉयोटिक का प्रयोग करते हैं। इसके अलावा पेडीस्ट्रीन को प्रभावित थन में चढ़ाने से, थन इस रोग से मुक्त हो जाता है।

Read Only - You can't save changes to this file.

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

■ लखनऊ व झांसी से प्रकाशित ■ www.spashtawaz.com

स्पष्ट आवाज़

लखनऊ, सोमवार, 2 अगस्त, 2021 वर्ष : 18, अंक: 35 पृष्ठ :12, मूल्यः ₹ 3

वर्षा ऋतु में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएंः डॉ. रामजी

कानपुर। सीएसए के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ रामजी गुप्ता ने पशुपालक भाइयों के लिए बरसात में पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं में कई प्रकार के संक्रामक रोग फैलते हैं, जो पशुओं को दयनीय अवस्था में पहुंचा देते हैं। पशु चारा खाना बंद कर देता है। दुधारू पशुओं का दूध बहुत कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में अगर ध्यान न दिया गया तो पीड़ित पशु की मौत भी सकती है। इसलिए पशुपालकों को इस मौसम में पशुओं की विशेष देखभाल करना चाहिए। अगर पशुपालक ऐसे समय पर पशुओं पर थोड़ा सा भी ध्यान दे तो पशु को विभिन्न संक्रामक रोगों से बचाया जा सकता है। संक्रामक बीमारियां एक दूसरे के सम्पर्क में आने से, बीमार पशु का दूषित जल एवं भोजन ग्रहण करने से फैलता है। डॉ गुप्ता ने बताया कि विषाणुजनित रोग खुरपका एवं मुंहपका पशुओं को, एक बहुत ही छोटे आंख से न दिख पाने वाले कीड़े द्वारा होता है। जिसे विषाणु या वायरस कहते हैं।